Topics 7 अव्ययीभाव 5

नस्तद्धिते । ९८

नान्तस्य भस्य टेर्लोपः स्यात्तद्धिते । उपराजम् । अध्यात्मम्

नकारान्त भसंज्ञक अङ्ग की 'टि' का तद्धित परे होने पर लोप होता है। उदाहरण के लिए 'उपराजन् अ' में उपराजन् भसंज्ञक अङ्ग है और उसके अन्त में नकार भी है। अतः तद्धित प्रत्यय 'टच्' (अ) परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से उसकी टि - अन् का लोप होकर 'उपराज् अ' = 'उपराज' रूप बनता है। इस स्थिति में प्रथमा के एकवचन में उपराजम् रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार 'आत्मन् ङि' 'अधि' में भी अव्यय विभक्ति - ० से समास होकर 'अधि आत्मन्' = 'अध्यात्मन्' रूप बनने पर 'टच्' और टि - लोप आदि होकर 'अध्यात्मम्' रूप सिद्ध होगा।

नपुंसकादन्यतरस्याम् ।

अन्नन्तं यत् क्लीबं तदन्तादव्ययीभावात् टज्वा स्यात् । उपचर्मम् । उपचर्म ।

जिस अव्ययीभाव के अन्त में अन्नन्त नपुंसक (जिसके अन्त में 'अन्' हो) उससे विकल्प से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। उदाहरण के लिए 'चर्मन् ङस् उप' में अव्ययं विभक्ति० से समास होकर 'उपचर्मन्' रूप बनता है। यहाँ अव्ययीभाव के अन्त में नपुंसक लिङ्ग 'चर्मन्' है और उसके अन्त में 'अन्' भी है। अतः प्रकृत सूत्र से विकल्प से समासान्त 'टच्' (अ) प्रत्यय होकर 'उपचर्मन् अ' रूप बनने पर टि-लोप आदि होकर 'उपचर्मम्' रूप सिद्ध होता है। 'टच्' के अभाव पक्ष में 'उपचर्म' रूप बनता है।

नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः।

वा टच् स्यात्। उपनदम्, उपनदि। उपपौर्णमासम्, उपपौर्णमासि। उपाग्रहायणम्, उपाग्रहायणि।

झयः

झयन्तादव्ययीभावाट्टज्वा स्यात्। उपसमिधम्, उपसमित्।

झयन्त अव्ययीभाव (जिसके अन्त में किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय वा चतुर्थ वर्ण हो) से विकल्प से समासान्त 'टच्' प्रत्यय-

होता है। उदाहरण के लिए समिध इस रूप में पूर्ववत् अव्ययं विभक्ति... से समास होकर 'उपसमिध' रूप बनता है। इस स्थिति में अव्ययीभाव के अन्त में झय् प्रत्याहार होने के कारण प्रकृत सूत्र से विकल्प से 'टच्' होकर 'उपसमिध अ = उपसमिध रूप बनेगा। तब प्रथमा के एकवचन में 'उपसमिधम्' रूप सिद्ध होता है। 'टच्' प्रत्यय के अभाव में 'उपसमित्' रूप बनता है।

गिरेश्च सेनकस्य।

गिर्यन्तादव्ययीभावाट्टज्वा स्यात्। सेनकग्रहणं पूजार्थम्। उपगिरम्, उपगिरि।